भारतीय वायु सेना की कहानी: ऐतिहासिक यात्रा

07 OCT 2024

1932 में अक्टूबर के एक सुखद दिन, भारत के आसमान ने एक नए रक्षक- भारतीय वायु सेना-का स्वागत किया । 8 अक्टूबर को स्थापित, इस महत्वपूर्ण संगठन के साथ वायु शक्ति की दिशा में एक विजन की शुरुआत हुई, जिसने परवर्ती दशकों में देश की प्रतिरक्षा को आकार प्रदान किया। कुछ ही महीनों बाद, 1 अप्रैल, 1933 को, भारतीय वायु सेना की पहली परिचालन उड़ान भरी गई, जिसमें छह आरएएफ-प्रशिक्षित अधिकारियों और 19 वायु सैनिकों का एक छोटा, परन्तु लक्ष्यबद्ध समूह था, जिसने चार वेस्टलैंड वापिटी आईआईए बाइप्लेन्स में, ड्रिग रोड् (पाकिस्तान के कराची में स्थित) में "ए" फ्लाइट का केंद्र बनाया, और इसके साथ ही नियोजित नंबर 1 (सेना के सहयोग से संचालित) स्क्वाड्रन की नींव रखी। यह उस सेना की शुरुआत थी जो दुनिया की सबसे दुर्जेय वायु सेनाओं में से एक के रूप में विकसित हुई।

प्रारंभिक वर्ष :1933 से 1941Early Years :1933 to1941

भारतीय वायुसेना की पहली संचालनगत उड़ान के बाद, इसके गठन के सिर्फ़ साढ़े चार साल बाद, 1936 में, "ए" फ़्लाइट ने उत्तरी वज़ीरिस्तान के मीरानशाह से पहली कार्रवाई में हिस्सा लिया, जिसमें विद्रोही भित्तानि जनजाति के खिलाफ़ भारतीय सेना के अभियान में सहायता की गई। अप्रैल 1936 में, "बी" फ़्लाइट की स्थापना की गई, जिसमें विंटेज वापिती का भी इस्तेमाल किया गया। जून 1938 में "सी" फ़्लाइट का गठन नहीं हुआ था, जिससे नंबर 1 स्क्वाड्रन अपनी पूरी ताकत पर आ गया। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के समय यह भारतीय वायु सेना का एकमात्र स्क्वाड्रन बना रहा, हालाँकि कर्मियों की संख्या में इजाफा हुआ, जिनमें 16 अधिकारी और 662 सैनिक शामिल थे।

वैश्विक संघर्ष बढ़ने के साथ ही, 1939 में चैटफील्ड समिति ने भारत की प्रतिरक्षा जरूरतों का पुनर्मूल्यांकन किया। समिति ने भारत में स्थित रॉयल एयर फोर्स (आरएएफ) स्क्वाड्रनों को फिर से सुसज्जित करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन आईएएफ के विकास में तेजी लाने के लिए कुछ सिफारिशें पेश कीं। परन्तु, प्रमुख बंदरगाहों की रक्षा में सहायता के लिए स्वैच्छिक आधार पर पांच तटीय रक्षा उड़ानें (सीडीएफ) शुरू करने की योजना मंजूर की गई। नियमित आईएएफ और आरएएफ कर्मियों के एक केंद्र के आसपास निर्मित, ये उड़ानें प्रमुख शहरों से संचालित होती थीं, जिनमें मद्रास में नंबर 1, बॉम्बे में नंबर 2, कलकत्ता में नंबर 3, कराची में नंबर 4 और कोचीन में नंबर 5 शामिल थे। बाद में विशाखापत्तनम में नंबर 6 का गठन किया गया।

मार्च 1941 तक, जैसे-जैसे भारतीय वायुसेना की मांग विकसित हुई, नंबर 1 और 3 सीडीएफ ने अपने वापिटिस से, सुंदरबन डेल्टा क्षेत्र में गश्त के लिए आर्मस्ट्रांग व्हिटवर्थ अटलांटा परिवहन में रूपांतरण किया और काफिले और तटीय गश्ती कर्तव्यों के लिए डी.एच. 89 ड्रैगन रैपिड्स और एकल डी.एच. 86 प्राप्त किया, जिसका उपयोग उन्होंने केप कैमोरिन और मालाबार तट के पश्चिम में गश्त करने के लिए किया।

इस अवधि ने चुनौतीपूर्ण समय के दौरान भारतीय वायुसेना के विकास और अनुकूलनशीलता के लिए मंच तैयार किया, जिसने हवाई रक्षा में इसके भविष्य की उन्नति के लिए एक ठोस आधार तैयार किया।

क्षमता निर्माण: युद्धकाल के दौरान प्रशिक्षण और विस्तार (1941-1946)

जैसे-जैसे द्वितीय विश्व युद्ध आगे बढ़ा, भारतीय वायु सेना ने अपनी परिचालन प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए एक व्यापक प्रशिक्षण संरचना की महत्वपूर्ण आवश्यकता को पहचाना। अगस्त 1941 में, ब्रिटिश रॉयल एयर फोर्स (RAF) ने ब्रिटिश भारत में विभिन्न फ्लाइंग क्लबों को उड़ान प्रशिक्षकों को नियुक्त किया, जिससे आईएएफ वालंटियर रिजर्व (आईएएफ वीआर) कैडेटों के महत्वपूर्ण कौशल विकास के लिए मंच तैयार हुआ। उस वर्ष के अंत तक, 364 कैडेटों ने ब्रिटिश भारत में सात क्लबों और दो रियासतों में टाइगर मॉथ विमान पर प्राथमिक उड़ान प्रशिक्षण प्राप्त किया, जो आईएएफ के विकास में एक महत्वपूर्ण क्षण था।

नं. 1 स्क्वाड्रन द्वारा वेस्टलैंड लिसेंडर में अपना रूपांतरण शुरू करने के साथ ही, आधुनिकीकरण के प्रयास स्पष्ट हो गए, जिन्हें बॉम्बे वार गिफ्ट्स फंड द्वारा उपहार में दिए गए 12 लिसेंडर्स की पूरी टुकड़ी से बल मिला। यह बदलाव न केवल विमान में उन्नयन बल्कि एक रणनीतिक वृद्धि भी दर्शाता है, जिससे स्क्वाड्रन को अधिक जटिल ऑपरेशन करने की अनुमति मिलती है। समवर्ती रूप से, नं. 2 स्क्वाड्रन सितंबर 1941 में वापीटी से ऑडैक्स में परिवर्तित हो गया, इसके बाद नं. 3 स्क्वाड्रन का गठन हुआ, जिसने भी ऑडैक्स मॉडल को अपनाया। ये परिवर्तन परिचालन तत्परता में सुधार करने की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं, जिससे भारतीय वायुसेना उभरते खतरों का अधिक प्रभावी ढंग से जवाब देने में सक्षम हो गई।

आईएएफ वी.आर. को नियमित आईएएफ में शामिल किया गया।

युद्धकालीन अभियानों की तात्कालिकता ने भारतीय वायु सेना के निरंतर विस्तार को प्रेरित किया। 1942 के अंत तक, नंबर 2 स्क्वाड्रन ने भी हरिकेन को अपनाया, जिससे इसकी परिचालन क्षमता में वृद्धि हुई।

1942 के अंत तक, सीमित संसाधनों और पुराने उपकरणों की चुनौतियों के बावजूद, भारतीय वायु सेना पाँच स्क्वाड्रनों को प्रभावी ढंग से संचालित करने में कामयाब हुई। तटीय रक्षा उड़ानों के विघटन की वजह से कार्मिकों का पुनर्गठन किया गया, जिसकी परिणति नंबर 7 स्क्वाड्रन के गठन के रूप में हुई, जो फरवरी 1943 के मध्य में यू.एस. निर्मित वेंजेंस वन डाइव बॉम्बर में रूपांतरित हो गया।

वर्ष 1944 के आगे बढ़ाने के साथ-साथ, भारतीय वायु सेना की परिचालन शक्ति का विस्तार जारी रहा। वर्ष के अंत तक, नौ स्क्वाड्रन सक्रिय थे, जिनमें से अधिकांश हरिकेन से और एक स्पिटफ़ायर से सुसज्जित था।.

युद्धकालीन अभियानों की तात्कालिकता ने भारतीय वायु सेना के निरंतर विस्तार को प्रेरित किया। 1942 के अंत तक, नंबर 2 स्क्वाड्रन ने भी हरिकेन को अपनाया, जिससे इसकी परिचालन क्षमता में वृद्धि हुई।

1942 के अंत तक, सीमित संसाधनों और पुराने उपकरणों की चुनौतियों के बावजूद, भारतीय वायु सेना पाँच स्क्वाड्रनों को प्रभावी ढंग से संचालित करने में कामयाब हुई। तटीय रक्षा उड़ानों के विघटन की वजह से कार्मिकों का पुनर्गठन किया गया, जिसकी परिणति नंबर 7 स्क्वाड्रन के गठन के रूप में हुई, जो फरवरी 1943 के मध्य में यू.एस. निर्मित वेंजेंस वन डाइव बॉम्बर में रूपांतरित हो गया।

वर्ष 1944 के आगे बढ़ाने के साथ-साथ, भारतीय वायु सेना की परिचालन शक्ति का विस्तार जारी रहा। वर्ष के अंत तक, नौ स्क्वाड्रन सक्रिय थे, जिनमें से अधिकांश हरिकेन से और एक स्पिटफ़ायर से सुसज्जित था।

युद्ध के दौरान, इसके कर्मियों की बहादुरी और समर्पण भावना स्वीकार करते हुए इसे 22 विशिष्ट फ्लाइंग क्रॉस और कई अन्य अलंकरणों से सम्मानित किया गया। इन उपलब्धियों के सम्मान में, मार्च 1945 में भारतीय वायुसेना को "रॉयल" उपसर्ग से सम्मानित किया गया, जो इसकी उभरती भूमिका और क्षमताओं का प्रमाण था।

1946 तक, द्वितीय विश्व युद्ध की विरासत ने भारतीय वायुसेना के भीतर महत्वपूर्ण विकास को उत्प्रेरित किया। कर्मियों की संख्या बढ़कर 28,500 हो गई, जिनमें लगभग 1,600 अधिकारी शामिल थे।.

स्वतंत्रता के बाद भारतीय वायु सेना का रूपांतरण (1947-1949)of the Indian Air Force Post-

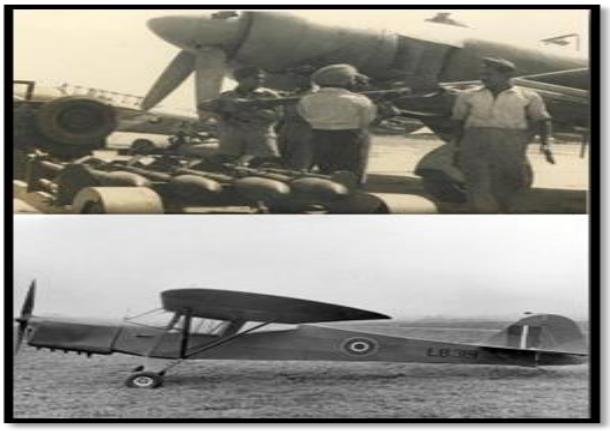

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय वायुसेना (IAF) में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। कर्मियों की संख्या लगभग आधी रह गई, जिनमें लगभग 14,000 अधिकारी और सैनिक शामिल थे। अक्टूबर 1946 तक, मौजूदा दस आरआईएएफ स्क्वाड्रनों को बीस के संतुलित बल में विस्तारित करने की योजना बनाई गई थी। जैसे-जैसे राजनीतिक परिदृश्य बदलता गया, प्रतिरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय स्वतंत्र भारत की नई सरकार पर छोड़ दिए गए। जापान से लौटने पर नंबर 4 स्क्वाड्रन टेम्पेस्ट II में परिवर्तित हो गया, जबकि नंबर 7 और 8 स्क्वाड्रन भी स्पिटफ़ायर से टेम्पेस्ट में परिवर्तित हो गए। 15 अगस्त, 1947 को भारत के विभाजन के साथ, कई इकाइयाँ समाप्त हो गईं, और नए बने रॉयल पाकिस्तान वायु सेना को उपकरण हस्तांतरित कर दिए गए। संघर्ष के अगले 15 महीनों में, आरआईएएफ ने लगातार पुनर्गठन और आधुनिकीकरण किया, अपने संचालन की देखरेख के लिए नई दिल्ली में वायु सेना मुख्यालय की स्थापना की। 1948 में, नंबर 2 स्क्वाड्रन को स्पिटफ़ायर XVIII से फिर से सुसज्जित किया गया, और उसी प्रकार नंबर 9 स्क्वाड्रन को फिर से खड़ा किया गया। अप्रैल 1950 में स्क्वाड्रन का दर्जा प्राप्त करने वाली नंबर 101 फोटो टोही फ्लाइट के गठन ने विकासशील क्षमताओं को उजागर किया। कश्मीर ऑपरेशन के दौरान हुए नुकसान की भरपाई के लिए, और अधिक टेम्पेस्ट II खरीदे गए, और बचाए गए अवशेषों से बी-24 लिबरेटर्स के पुनर्निर्माण की योजनाएँ शुरू की गईं, जिसके तहत नवंबर 1948 तक नंबर 5 स्क्वाड्रन का गठन किया गया।

गणतंत्र की स्थापना और विस्तार (1950-1962) of the Republic and Expansion (1950-1962)

जनवरी 1950 में, भारत ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के भीतर एक गणराज्य बन गया, जिसके कारण भारतीय वायु सेना (आईएएफ) ने अपना "रॉयल" उपसर्ग छोड़ दिया। उस समय, आईएएफ में स्पिटफ़ायर, वैम्पायर और टेम्पेस्ट से लैस छह लड़ाकू स्क्वाड्रन शामिल थे, जो कानपुर, पूना, अंबाला और पालम से संचालित होते थे, साथ ही एक बी-24 बमवर्षक स्क्वाड्रन, एक सी-47 डकोटा परिवहन स्क्वाड्रन, एक एओपी फ़्लाइट और पालम में एक संचार स्क्वाड्रन भी था। प्रशिक्षण में आरएएफ मानकों का पालन किया गया, जिसमें हैदराबाद में नंबर 1 फ़्लाइंग ट्रेनिंग स्कूल और जोधपुर में नंबर 2 एफटीएस जैसे प्रमुख संस्थान पायलट प्रशिक्षण के लिए स्थापित किए गए। 1950 की शुरुआत में, नंबर 2 स्क्वाड्रन को स्पिटफ़ायर XVIII विमान से फिर से सुसज्जित किया गया था, और नंबर 9 स्क्वाड्रन को इस प्रकार से फिर से खड़ा किया गया था, जबकि नंबर 101 फ़ोटो टोही फ़्लाइट ने अप्रैल 1950 में पूर्ण स्क्वाड्रन का दर्जा हासिल किया। 1951 तक, वैम्पायर एनएफ एमके 54 लड़ाकू विमानों की शुरूआत के साथ रात्रि लड़ाई क्षमताओं को बढ़ाया गया था। पाकिस्तान के साथ बिगड़ते संबंधों के बीच, भारतीय वायुसेना ने 1953 और 1957 के बीच बड़े विस्तार की योजना बनाई, अक्टूबर 1953 में डसॉल्ट ऑरागन लड़ाकू विमान का चयन किया, जिनमें से पहले चार 24 अक्टूबर 1953 को पहुंचे। समवर्ती रूप से, 1951 में एक दूसरा परिवहन स्क्वाड्रन बनाया गया था, और 1954 के अंत तक, भारतीय वायुसेना ने 26 फेयरचाइल्ड सी-119 जी पैकेट्स खरीदे थे, जिससे इसकी एयरलिफ्ट क्षमता बढ़ गई थी। वर्ष 1955 में एक अनुरक्षण कमान की स्थापना हुई और अनुषंगी वायु सेना का पुनरुत्थान हुआ, जिसने पूरे भारत में कई स्क्वाड्रन बनाए। 1957 में 110 डसॉल्ट मिस्टेयर आईवीएज के आगमन के साथ ही हॉकर हंटर्स और इंग्लिश इलेक्ट्रिक कैनबरा के साथ एक महत्वपूर्ण आधुनिकीकरण अभियान शुरू हुआ, क्योंकि आईएएफ ने 15 स्क्वाड्रन बल से 33 स्क्वाड्रन के लक्ष्य में परिवर्तन किया। 1961 में कांगो में संयुक्त राष्ट्र मिशन के दौरान आईएएफ की परिचालन क्षमताओं का और परीक्षण किया गया, जहाँ आस्ट्रेलिया ने महत्वपूर्ण लंबी दूरी की हवाई सहायता प्रदान की। चीन के साथ बढ़ते तनाव का अंत अगस्त 1962 में सोवियत संघ के साथ मिग-21 लड़ाकू विमानों और सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों की खरीद के लिए प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर करने के साथ हुआ, जिसने आईएएफ के परिचालन ढांचे में एक महत्वपूर्ण बदलाव को अंजाम दिया।

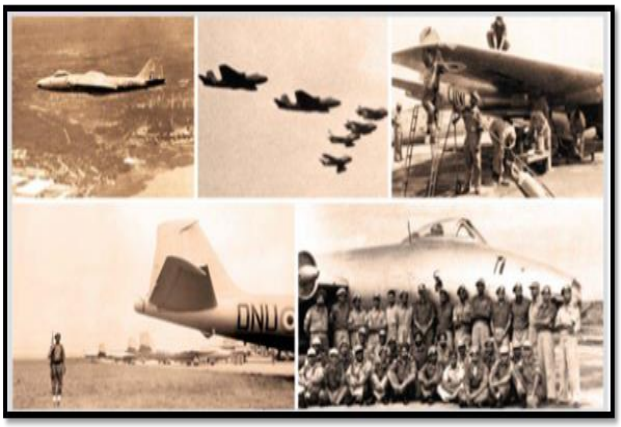

आधुनिकीकरण)1966-1971 (Modernization)1966-1971(

1966 और 1971 के बीच, भारतीय वायु सेना (आईएएफ) ने आधुनिकीकरण और रणनीतिक विस्तार से युक्त एक परिवर्तनकारी अवधि का अनुभव किया, जो मुख्य रूप से भारत-पाकिस्तान संघर्ष से सीखे गए सबक से प्रेरित था। इस युग ने न केवल एक सक्षम और अच्छी तरह से प्रशिक्षित कार्मिक आधार के महत्व को रेखांकित किया, बल्कि उन्नत और प्रभावी उपकरणों की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर भी बल दिया। आधुनिकीकरण के इस प्रयास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मिग-21 एफएल की शुरूआत थी, जो मिग-21 का एक उन्नत संस्करण था, जिसने कई स्क्वाड्रनों को सुसज्जित करना शुरू किया। इस विमान ने उन्नत क्षमताएँ प्रदान कीं जो हवाई युद्ध और अवरोधन के लिए महत्वपूर्ण थीं, जिससे उन स्क्वाड्रनों को फिर से सुसज्जित किया जा सका जो वैम्पायर एफबी एमके 52 जैसे अप्रचलित मॉडल का संचालन कर रहे थे।

इस अवधि के दौरान नए स्क्वाड्रनों के गठन से भारतीय वायु सेना की अपनी युद्ध तत्परता बढ़ाने की प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है। 1965 के संघर्ष में अपनी उपयोगिता साबित करने वाले नैट का उत्पादन फिर से शुरू किया गया, जिसके परिणामस्वरूप 1968 तक चार अतिरिक्त नैट स्क्वाड्रनों की स्थापना हुई। मिग-21एफएल और नैट के अलावा, भारतीय वायु सेना ने सुखोई एसयू-7बीएम् को भी अपने बेड़े में शामिल किया, जिसकी डिलीवरी मार्च 1968 में शुरू हुई।

जैसे-जैसे साठ का दशक सत्तर के दशक में बदल रहा था, भारतीय वायुसेना ने न केवल अपनी विस्तार योजनाओं को मजबूत किया, बल्कि अपने संचालन की दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ाने पर भी ध्यान केंद्रित किया। इस वृद्धि ने धीरे-धीरे अप्रचलित उपकरणों को हटाने और सूची में एचएफ-24, मिग-21एफएल और सुखोई एसयू-7बीएम की बढ़ती संख्या को शामिल करने की आवश्यकता जतायी।

उभरते खतरों, विशेष रूप से चीन-भारतीय सीमा पर, के जवाब में, भारतीय वायुसेना ने मार्च 1971 में एक व्यापक वायु रक्षा ग्राउंड एनवायरनमेंट सिस्टम (एडीजीईएस) की योजना शुरू की। इस प्रणाली का उद्देश्य निगरानी क्षमताओं को बढ़ाना और वायु सेना की समग्र परिचालन तत्परता में सुधार करना था। जनवरी 1971 में डुंडीगल में वायु सेना अकादमी का उद्घाटन एक मजबूत प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था, जो आने वाले वर्षों में भारतीय वायुसेना की परिचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ।.

Krgil Conflict; Transformation and Challenges

कारगिल संघर्ष; परिवर्तन और चुनौतियाँ

1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध से लेकर 1999 में कारगिल संघर्ष तक भारतीय वायु सेना (आईएएफ) का विकास इसकी महत्वपूर्ण वृद्धि और आधुनिकीकरण को दर्शाता है। 1971 के युद्ध में, आईएएफ के प्रभावी संचालन ने इसकी

शुरुआती ताकत प्रदर्शित की, जिसमें 4,000 से अधिक उड़ानें और नैट्स और मिग-21 का उपयोग करके हवाई श्रेष्ठता शामिल थी। 1970 के दशक के मध्य तक, आईएएफ ने जगुआर और मिराज 2000 जैसे विमानों को पेश करके आधुनिकीकरण किया, जिससे इसकी क्षमताएँ बढ़ गईं।.

1999 के कारगिल युद्ध के दौरान, ऑपरेशन सफ़ेदसागर में भारतीय वायुसेना की सटीक हवाई सहायता, विशेष रूप से उच्च ऊंचाई वाले इलाकों में, आधुनिक युद्ध के लिए अनुकूल होने की इसकी क्षमता को रेखांकित करती है। भारतीय हताहतों को कम करने और दुश्मन की रक्षा को बेअसर करने में वायु शक्ति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें मिग और मिराज बेड़े ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। एमआई-17 जैसे उन्नत हेलीकॉप्टरों के सफल उपयोग ने आईएएफ की सामरिक सशक्तता में और वृद्धि की।

1999 के बाद, भारतीय वायुसेना का आधुनिकीकरण 2016 में स्वदेशी तेजस लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट के शामिल होने के साथ जारी रहा। इसका डिजाइन मल्टी-रोल मिशनों के लिए किया गया था, जिसमें उन्नत एवियोनिक्स और गतिशीलता की विशेषता थी। यह विकास भारतीय वायुसेना के, एक दुर्जेय और तकनीकी रूप से उन्नत बल में परिवर्तन को दर्शाता है।

92वां स्थापना दिवस

Raising Day

2024 में भारतीय वायुसेना अपना 92वां स्थापना दिवस मनाने की तैयारी कर रही है, जिसमें यह अपनी समृद्ध विरासत का सम्मान करते हुए परिचालन क्षमताओं को मजबूत करने और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करेगी। यह स्मरणोत्सव 6 अक्टूबर को शुरू हुआ और 8 अक्टूबर को दक्षिणी शहर चेन्नई में समाप्त होगा, जिसे उत्सव के जीवंत केंद्र में बदल दिया गया है। मरीना बीच के ऊपर का आसमान जीवंत हो उठता है, जब भारतीय वायुसेना "भारतीय वायु सेना - सक्षम, सशक्त, आत्मनिर्भर" विषय पर एक शानदार एयर शो का प्रदर्शन करती है। यह विषय देश के हवाई क्षेत्र की सुरक्षा के लिए भारतीय वायुसेना के अटूट समर्पण को दर्शाता है, जबकि आत्मनिर्भरता पर इसके फोकस पर जोर देता है।

निष्कर्ष

भारतीय वायु सेना (आईएएफ) भारत की रक्षा रणनीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जो बहादुरी और नवाचार की समृद्ध विरासत को दर्शाता है। अपने आधुनिक बेड़े और उन्नत तकनीकी क्षमताओं के साथ, आईएएफ देश की संप्रभुता की रक्षा करने और क्षेत्रीय स्थिरता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कठोर प्रशिक्षण, रणनीतिक साझेदारी और मानवीय मिशनों के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से, आईएएफ न केवल भारत के आसमान की रक्षा

करती है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को भी बढ़ावा देती है। जैसे-जैसे यह विकसित हो रही है, आईएएफ हर प्रयास में ईमानदारी, सेवा और उत्कृष्टता के अपने मूल मूल्यों को बनाए रखने के लिए समर्पित रहती है।

संदर्भ:

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2057260

https://afcat.cdac.in/AFCAT/iafHistory

https://indianairforce.nic.in/history-timeline/

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2057260

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1936373

*****

एमजी/आरपीएम/केसी/एनके/डीके

Backgrounder ID: 153257